بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 16 अगस्त 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध के हवाले से इफ़्क की घटना का सविस्तार वर्णन तथा बंगला देश एवं पाकिस्तान के अहमदियों और मुस्लिम उम्मः के लिए दुआओं की तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-16.08.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले कुछ ख़ुत्बों में बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध का वर्णन हो रहा था जिसके और अधिक वर्णन में यह बात भी लिखी है कि बनू मुस्तलक़ से वापसी पर जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नक़ीअ नामक स्थान से होकर गए तो वहाँ बड़ी समृद्धि, घास एवं तालाब देखे। आप स. के पूछे जाने पर बताया गया कि गर्मियों में इस तालाब का पानी कम हो जाता है। आप स. ने हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ﷺ को कुआँ खोदने तथा इस स्थान को चरागाह बनाने का आदेश दिया तथा हज़रत बिलाल बिन हारिस अलमज़नी को निगरान नियुक्त फ़रमाया। आप स. ने उन्हें फ़रमाया कि भोर के समय एक व्यक्ति को किसी पहाड़ पर खड़ा करो तथा जहाँ तक उसकी आवाज़ जाए, वहाँ तक मुसलमानों के जिहाद वाले ऊँटों तथा घोड़ों के लिए चरागाह बनाओ। आप स. ने कमज़ोर पुरुष व महिला तथा निर्धन लोगों को इस चरागाह में अपनी भेड़ बकरियाँ चराने की अनुमति भी दी। यह चरागाह हज़रत अबू बकर ﷺ, हज़रत उमर ﷺ, हज़रत उसमान ﷺ की ख़िलाफ़त के दौर तक स्थापित रही तथा उसके बाद घोड़ों तथा ऊँटों की संख्या अधिक हो जाने के कारण इसका स्थान बदल दिया गया।

रसूलुल्लाह ﷺ सहाबियों को चौकन्ना तथा सावधान रखने की बड़ी व्यवस्था फ़रमाया करते थे तथा समय समय पर उनमें खेल के एसे आयोजन करवाते कि जिनमें दलेरी, शौर्य, ईमानी तथा जिहादी प्रशिक्षण का रंग होता था। अतएव बनू मुस्तलक़ से वापसी पर नक़ीअ नामक स्थान पर आप स. ने सहाबियों के बीच घोड़ों तथा ऊँटों की दौड़ का मुक़ाबला भी करवाया। आप स. की कसवा नामक ऊँटनी सब ऊँटों से आगे निकल गई और आप स. का घोड़ा ज़रब नामक भी सब घोड़ों से आगे निकल गया। इसी स्थान पर आप स. ने हज़रत आयशा रज़ी. से भी दौड़ का मुक़ाबला किया और इस मुक़ाबले में आप स. उनसे आगे निकल गए और फ़रमाया कि यह उस बार की हार का बदला है जब तुम मुझसे आगे निकल गईं थीं। इस वाक्य में आप स. ने पिछली एक घटना की ओर संकेत फ़रमाया, जब आप स. हज़रत अबू बकर رضي الله عنه के मकान पर तशरीफ़ ले गए और आप स. ने हज़रत आयशा रज़ी. के हाथ में कोई चीज़ देखी और आप स. के मांगने पर उन्होंने इंकार करके भागना शुरु किया। आप स. भी उनकी ओर दौड़े किन्तु वे हाथ न आईं तथा आगे निकल गईं। ये वे बातें हैं जो घर को प्रसन्न एंव सुखद बनाने के लिए किया करते थे। हर एक काम में आप स. ने हमारे सामने अपना नमूना क़ायम फ़रमाया है। यह उन लोगों के लिए भी सुन्दर नमूना है जो अपनी पतनियों के साथ कठोर व्यवहार करते हैं। आजलक के लोगों के लिए भी यह नमूना है। पतनियों के साथ यह सुन्दर व्यवहार इस्लाम ने सिखाया जिसका नमूना आँहज़रत ﷺ ने क़ायम फ़रमाया।

इस यात्रा में इफ़क नामक घटना का भी वर्णन मिलता है। उसका विवरण इस प्रकार है कि बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध से वापसी पर मुनाफ़िक़ों की ओर से एक अन्य उपद्रव खड़ा किया गया और वह उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी. पर झूठा आरोप लगाने की घटना है।

सहो बुख़ारी की रिवायत के अनुसार हज़रत आयशा रज़ी. इफ़क नामक घटना को बयान करते हुए फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी यात्रा का निश्चय फ़रमाते तो अपनी पतनियों के बीच कुरआ (पर्चियों पर अपनी पतनियों के नाम लिख कर) डालते, फिर उनमें से जिसका कुरआ, जिसका नाम निकलता था उसको रसूलुल्लाह ﷺ अपने साथ ले जाते। हज़रत आयशा रज़ी. ने बयान किया कि आप स. ने एक लड़ाई पर जाने के लिए हमारे बीच कुरआ डाला और कुरआ मेरे नाम का निकला। पर्दे का आदेश आ चुका था और मैं आप स. के साथ गई। यात्रा के समय मैं हौदज (ऊँट की पीठ पर सवारी लिए बनी डोली) के अन्दर बैठती थी तथा लोग मेरे हौदज को उठा कर ऊँट पर रख देते थे तथा जहाँ विश्राम करना होता, वहां मेरे हौदज को उतार कर नीचे रख देते थे। युद्ध से वापसी पर जब हम मदीने के निकट पहुंचे तो एक रात आप स. ने प्रस्थान करने का निर्देश दिया। मैं शौच इत्यादि के लिए बाहर की ओर चली गई तथा जब मैं वापस अपनी सवारी की ओर बढ़ी तो अपनी छाती पर हाथ रखा तो पता चला कि मेरी ज़फ़ार के नगों वाली माला कहीं टूट कर गिर गई है। मैं उसको खोजती हुई वापस गई। वे लोग जो मेरे हौदज को उठाया करते थे, उन्होंने मेरे हौदज को उठा कर ऊँट पर रख लिया क्यूँकि उन्हांने समझा कि मैं हौदज में हूँ और वे चल दिए। मैंने अपनी माला को खोज लिया तथा जब मैं पड़ाव की ओर वापस आई तो वहाँ कोई न था, सब जा चुके थे। मैं अपने उसी स्थान पर चली गई जहाँ मैं बैठी थी और सोचा कि जब वे लोग मुझे गुम पाएँगे तो वापस लौट आँएगे। इसी बीच मेरी आँख लग गई और मैं सो गई।

सफ़वान बिन मुअत्तल ﷺ की ड्यूटी सेना के पीछे चलने की थी ताकि किसी गिरी पड़ी चीज़ को उठाते रहें। वे जब सुबह को मेरे ठिकाने के निकट पहुंचे तो उन्होंने मुझे पहचान लिया क्यूँकि पर्दे के आदेश से पहले उन्होंने मुझे देखा हुआ था। मैं उनके **इन्ना लिल्लाहि** पढ़ने के कारण जाग गई। मैंने अपनी चादर से अपना चेहरा छिपा लिया और अल्लाह की क़सम! हमने एक बात भी न की। मैं उनकी ऊँटनी पर सवार हो गई तथा हम बड़ी गर्मी में ठीक दोपहर के समय, जबकि सेना ने पड़ाव किया हुआ था, सेना के पास पहुंच गए। हज़रत आयशा रज़ी. ने कहा- हलाक हो गया वह जो विनाश हो गया तथा वह जिसने आरोप लगाने में विशिष्ट भूमिका निभाई। वह अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल था।

हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि हम मदीने पहुंचे तो मैं बीमार हो गई तथा मुझे इस आरोप के सम्बंध में कुछ भी पता नहीं था। बीमारी में मुझे व्याकुल करने वाली बात यह थी कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ओर से वह दयालुता नहीं देख रही थी, जो मैं आप स. में देखा करती थी। रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास आते और सलाम करते, फिर फ़रमाते कि तुम्हारा क्या हाल है? और चले जाते। बस इतना ही था। यह बात मुझे परेशान करती थी।

मैं एक दिन उम्मे मुस्तह के साथ बाहर गई तो मुझे आरोप लगाने वालों के विषय में पता चला। मैं अपने घर में वापस आई तो रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास आए। मैंने कहा कि क्या आप स. मुझे अनुमति देते हैं कि मैं अपने माता-पिता के पास चली जाऊँ। आप स. ने आज्ञा दे दी और मैं अपने घर चली गई। मैंने अपनी माँ से कहा कि लोग क्या बातें कर रहे हैं? माँ ने कहा कि धैर्य रखो। फिर हज़रत अबू बकर ﷺ ने मेरी आवाज़ सुनी तो कहा कि मेरी प्यारी बेटी! मैं तुम्हें क़सम देता हूँ कि तुम अपने घर लौट जाओ, तो मैं लौट गई। हज़रत आयशा रज़ी. कहती हैं कि मैं पूरी रात रोती रही, यहाँ तक कि सवेरा हो गया। उस दिन रसूलुल्लाह ﷺ न हज़रत अली बिन अबी तालिब ﷺ और उसामा बिन ज़ैद ﷺ से मुझे अपने से दूर कर देने पर विचार विमर्श किया। हज़रत उसामा ﷺ ने निवेदन पूर्वक कहा कि वे आपकी पवित्र पतनी हैं तथा हम उनके विषय में भलाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते, यह आरोप पूर्णत्या झूठ एवं निराधार है। हज़रत अली ﷺ ने कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! अल्लाह ने आप पर कोई तंगी नहीं फ़रमाई तथा इनके अतिरिक्त अनेक महिलाएँ हैं, आप सेविका से पूछिए, वह स्पष्ट सच कहेगी। आप स. के पूछने पर सेविका ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! मैंने उनकी कभी कोई ऐसी बात नहीं देखी जिसको मैं दोष समझती हूँ।

उसी दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने मिम्बर पर खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन अबी के प्रति अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए फ़रमाया कि ऐ मुसलमानो की जमाअत! कौन मुझे उससे बचाएगा, जिसकी ओर से मुझे तथा मेरे घर वालों के बारे में कष्ट पहुंचा? अल्लाह की क़सम! मैं अपने घर वालों के बारे में केवल भलाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता। हज़रत सअद बिन मुआज़ ﷺ ने कहा कि मैं आप स. को बचाऊँगा। यदि यह व्यक्ति हमारे क़बीले औस का हो तो उसकी गर्दन उड़ा दूँगा तथा यदि वह क़बीला ख़िज़रज से हो तो जिस तरह आप स. आदेश देंगे, हम करने को तय्यार हैं। क़बीला ख़िज़रज के रईस सअद बिन अबादा ﷺ खड़े हुए तथा सअद बिन मुआज़ ﷺ को कहा कि तुमने झूठ कहा है। ख़ुदा की क़सम, तुम हमारे किसी आदमी की हत्या नहीं कर सकोगे। इन

बातों से औस तथा ख़िज़रज नामक क़बीले के कुछ लोगों को जोश आ गया तथा सम्भावना थी कि लड़ाई हो जाती परन्तु आँहज़रत ﷺ ने सबको समझा बुझा कर ठंडा किया और चुपचाप वहाँ से तशरीफ़ ले गए।

हज़रत आयशा रज़ी. कहती हैं कि मेरे आँसू थमते नहीं थे और नींद हराम हो गई थी, इसी अवस्था में आप स. मेरे पास तशरीफ़ लाए, तश्शह्हुद पढ़ा और फ़रमाया कि ऐ आयशा! देखो, तुम्हारे बारे में मुझे यह और यह बात पहुंची है। यदि तुम निर्दोष हो तो मुझे आशा है कि ख़ुदा अवश्य तुम्हें क्षमा कर देगा तथा यदि तुमसे कोई भूल चूक हुई है तो ख़ुदा से मग़फ़िरत मांगो, क्यूँकि जब बन्दा तौबा करता है तो ख़ुदा उसकी तौबा को क़बूल करता है तथा उस पर दया करता है। मैंने अपने वालिदैन से कहा कि आप रसूलुल्लाह स. को इस बात का उत्तर दें। दोनों ने कहा कि हमें नहीं समझ में आ रहा कि क्या जवाब दें। तब मैंने आप स. से कहा- मुझे तो अपना मामला यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बाप जैसा लगता है, जिसने कहा था कि- فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ अर्थात- सर्वत्र धैर्य एवं संतोष (के अतिरिक्त मैं क्या कर सकता हूँ) और अल्लाह ही है जिससे इस (बात) पर मदद मांगी जाए, जो तुम बयान करते हो। अतएव मेरे लिए भी धैर्य ही उचित है, अल्लाह तआला अवश्य मेरे मामल में मुझे निर्दोष फ़रमाएगा।

फिर अभी आप स. उठने भी न पाए थे कि आप स. पर वह्यी नाज़िल हो गई तथा आप स. ने इस अवस्था के बाद मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि आयशा! ख़ुदा ने तुम्हें निर्दोष फ़रमा दिया है।

जब मुझे निर्दोष कर दिया गया तो हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ मुस्तह बिन असासा की निर्धनता के कारण उनकी सहायता किया करते थे, उन्होंने क़सम खाई कि अब उनकी सहायता नहीं करूँगा। किन्तु अल्लाह तआला ने वह्यी नाज़िल फ़रमाई कि ऐसा करना कदाचित उचित नहीं है। जिस पर हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मेरे गुनाहों को छिपा दे और संकल्प किया कि भविष्य में कभी मुस्तह का अनुदान बन्द नहीं करूँगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- आज फिर में दुआ की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

बंगला देश के अहमदियों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनके हालात भी जल्द बेहतर फ़रमाए। पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उनके हालात भी बेहतर फ़रमाए। फ़लिस्तीन के पीड़ितों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उनकी हालत पर भी रहम फ़रमाए। मुस्लिम देशों के लिए (दुआ करें), अल्लाह तआला उनके लीडरों को बुद्धि दे तथा वे जनता के अधिकार देने वाले बनें, अत्याचार करने वाले न बनें, क्यूँकि उनके अत्याचार के कारण ही दुश्मनों में साहस पैदा होता है कि मुसलमानों पर अत्याचार करते चले जाएँ। क्यूँकि उनको पता है कि स्वयं हक़ अदा नहीं कर रहे तो हमारे से किस तरह हक़ मांग सकते हैं, अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मः पर रहम फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131